मेरा बात – आपके लिए

यह पुस्तक मेरे लिए मात्र पुस्तक नहीं है, यह मेरे लिए आप सब के साथ जीवन की यात्रा है।

यह कहानियाँ मात्र कहानियाँ नहीं है, यह सुख - दुख के साथ जिया गया जीवन है। इन कहानियों में कहीं न कहीं आप ख़ुद को ढूँढ़ पाएँगे बस इतना कह सकता हूँ। मन के किसी भी कोने में यदि ये कहानियाँ आपके सोये हुये जज़्बात को जगा पायीं तो मैं अपने लेखन को धन्य समझूँगा।

पुस्तक की कहानियाँ मेरी सहेली, जागरण सखी व दैनिक जागरण में पूर्व प्रकाशित हैं।

मेरी सहेली हिंदी की सर्वाधिक बिकने वाली पत्रिका है और इस की एक करोड़ से अधिक प्रतियाँ प्रतिमाह बिकती हैं। जागरण सखी के विषय में भी ऐसा ही है।

“क्षमा करना पार्वती” दैनिक जागरण में प्रकाशित कहानी है।

कहानियों के विषय में बस इतना ही कहूँगा कि सभी कहानियां पाठकों और संपादकों द्वारा बहुत पसंद की गई हैं।

इन कहानियों पर पाठकों के पत्र ने मुझे चौंका दिया था। पाठकों के पत्र के बाद मैंने कहानी लेखन को गंभीरता से लेना

प्रारंभ किया और निरंतर कहानियाँ लिख रहा हूँ। “अभी तक इतनी ही” कहानियाँ लिखी हैं लेकिन यह कहानियाँ पढ़ते हुए मुझे भी अनेक स्थान पर आँसू आ जाते हैं। यह कहानियाँ मनोभावों को गहरे तक छूती हैं और हमें रुपये-पैसे, धन-दौलत से ऊपर उठ कर सच्चे रिश्ते व संबंधों के लिए जीना सिखाती हैं। इन कहानियों में जीवन के अर्थ प्रकट होते हैं शायद इसीलिए कहानियाँ निरन्तर सराही जा रही हैं और सभी पत्रिकाओं में इन की माँग बढ़ रही है।

एक लेखक होने के नाते यह मेरा सामाजिक सरोकार भी है कि मैं अपने समकालीन समाज से संपर्क करूँ उससे जुड़ूँ, उनके सुख-दुख व जीवन में सहभागी बनूँ। प्रभु मुझ से लेखनी के माध्यम से जो करने की प्रेरणा देता है मैं बस उसे आदेश मान कर पूर्ण करने के प्रयास में जुट जाता हूँ, उस से आगे की घटना मेरे लिए परमात्मा का प्रसाद है चाहे वह पुस्तक के रूप में मिले, आपके स्नेह के रूप में या फिर पाठकों की प्रशंसा के रूप में।

मुरली श्रीवास्तव

मेला

छोटे-छोटे बच्चों का हाथ पकड़े परिवार के परिवार घूम रहे थे और जीवन के हर रंग का आनंद उठा रहे थे। वे जब पाँच रुपये का गुब्बारा या सात रुपये की पिपिहरी भी ख़रीदते तो रुपये दो रुपये का मोलभाव कर लेते।

इसके बाद छोटे-छोटे खिलौनों को बच्चों को सौंपते हुए एक अजीब सी तृप्ति की अनुभूति होती उन्हें। बच्चे भी खिलौने पा कर ऐसे ख़ुश होते जैसे उन्हें मुँह माँगी मुराद मिल गयी हो।

कितना फ़र्क़ है इस मेले और शॉपिंग माल की भीड़ में जहाँ फ़िफ़्टी परसेंट डिस्काउंट के बाद भी सामान ख़रीदने का कोई सुख नहीं है।

"बेटा तुमने आज मेले के सही अर्थ को समझा है यदि बाहरी मेले से हम हृदय में उमंग और ख़ुशी के असली मेले को जगा सकें तो समझो घूमना-फिरना सफल हो गया, वर्ना पहाड़ पर घूम आओ या शॉपिंग माल में- सब निरर्थक है।"

लाईक्स

"ये बड़े-बड़े अस्पताल जिस में एक मरीज़ को देखने भर की फ़ीस ही हज़ार रुपये से कम नहीं है पूरे के पूरे भरे रहते हैं। ये काले कोट वाले नामी वकील जो एक-एक हियरिंग के पाँच से दस लाख लेते हैं इन के पास समय नहीं होता।"

"ये कौन लोग हैं" जिनके पास इतना पैसा है, और जिनके पास इतना पैसा है, जिनके पास इतनी अमीरी है उन्हें तो कोई तकलीफ़ ही नहीं होनी चाहिये। अगर काले और सफ़ेद कोट वाले बड़े और अमीर लोगों के घर में आते-जाते हैं, तो भला यह भी कोई अमीरी हुई। अगर पैसे की बात छोड़ दें तो और शांति के मामले में इन से बड़ा ग़रीब कोई नहीं है।

मगर नहीं, अभी यह सब सोचने की ज़रूरत क्या है अगर आस-पास उसे शोर अधिक महसूस हो रहा है तो उसका कारण उसके अपने स्पीकर का वॉल्यूम है, क्योंकि खाली कमरे में उसके अलावा और कोई नहीं है।

सच पूछिये तो आज के आदमी की सब से बड़ी भूख नाम और शोहरत की है। अपनी पहचान बनाने की है। रोटी कपड़ा और मकान की भूख तो छोटी भूख है यह तो आज हर आम आदमी कि किसी न किसी तरह पूरी कर ही रहा है।

चरित्रहीन

"एण्ड लॉस्ट बट नाट लीस्ट, यू आर स्वीट मिस के.वाई. डू योर जॉब सीरियसली डोंट टेक टेंशन, आई अम हीयर टु हेल्प यू। यू मे आस्क एनी थिंग (आप बहुत अच्छी हैं मिस के.वाई. और अपना काम गम्भीरता से कीजिये मैं आपकी सहायता के लिये यहाँ हूँ और आप मुझ से कुछ भी पूछ सकती हैं।)"

मिस के.वाई. को रोमांच हो आया, व्हाट अ पर्सन मिस्टर आर.के. मोहन इज़।

उम्र पचास पार पर फ़िटनेस ऐसी कि नये लोगों को मात कर दें। धीर-गम्भीर व्यक्तित्व और बात करने पर उतर आयें तो उम्र का फ़र्क़ ख़त्म हो जाये। हर काम को करने का अपना तरीक़ा।

मोहन जी मुस्कुराये, "ओह मिस के.वाई. मैंने सोचा ही नहीं कि आपको घर भी बुलाना चाहिये। आई अम सारी मेरी एक ही प्रॉब्लम है मैं अकेला रहता हूँ।"

"ओह सर नेवर माईण्ड वी कैन मीट ऐनी टाईम।"

मोहन जी ने कुछ सोचा, "देखो मिस के.वाई. इस सण्डे तुम मेरे घर आ रही हो और हम लोग मिल कर वीक एण्ड मनायेंगे।"

अचानक मिले इस ऑफ़र से मिस के.वाई. सकते में आ गई। उसने सोचा ही नहीं था कि बात इतनी बढ़ जायेगी।

उसे तेज़ सिर दर्द होने लगा। उसने जब पूरे घटना क्रम पर विचार किया तो उसे अपनी ग़लती नज़र आयी।

क्षमा करना पार्वती

पार्वती ने गहराई से असीम को देखा सब ठीक तो है, आख़िर आज असीम कहना क्या चाह रहे हैं?

वह धीरे से बोली, “हाँ, असीम बोलो मैं सुन रही हूँ।”

असीम ने बड़ी गंभीरता से कहा - “आई एम सॉरी पार्वती मुझे माफ़ कर दो।”

“तुम भी कैसी बात करते हो, तुमने कौन सी ग़लती की है कि माफ़ी माँग रहे हो।”

टूटे खिलौने

भाई को रोते देख वह बोला, "भैया आप भी मेरा खिलौना तोड़ दो बात बराबर हो जायेगी।"

और वह बोला, "कोई बात नहीं भाई, मैं इसके हाथ फेवीकोल से चिपका दूँगा पर तुम्हारा खिलौना नहीं तोड़ूँगा। भला तुम्हारे खिलौने के तोड़ने से मेरे सिपाही का हाथ थोड़ी जुड़ जायेगा। तुमने अपने कोर्स की किताब में वह कहानी नहीं पढ़ी जिसमें राजा ने तीर से घायल हंस उस राजकुमार को दिया जिसने उसे चोट लगने पर बचाया था। उसे नहीं जिसने उसे तीर मार कर धरती पर गिराया था, जानते हो क्यों? क्योंकि मारने वाले से बचाने वाले का अधिकार ज़्यादा होता है।"

आह फिर एक टीस उठी बड़े होने पर भाई को मकान चाहिये था और उसने रिश्तों को खिलौनों की तरह ही तोड़ दिया।

सोन चिरैया

पापा कहानी सुनाते-सुनाते आगे कहते, “कुछ दिन तो रानी सोन चिरैया से बहली रही, लेकिन कुछ समय बाद उसे उदासी फिर से घेरने लगी। धीरे-धीरे उसकी सोन चिरैया से दोस्ती हो गयी।

"एक दिन रानी ने सोन चिरैया से कहा - 'बहन, एक बात पूछूँ सच बताओगी?'

वह बोली – 'पूछो रानी अब तुम से क्या भेद'

रानी बोली – 'यह बता तू कौन है और मेरे बारे में क्या सोचती है?'

सोन चिरैया हँसी, बोली – 'हे रानी, मैं तो तुम्हारे भीतर बैठी लालसा हूँ, जो तुम सोचती और माँगती हो, वही तो मैं तुम्हें देती हूँ। फिर भी तुम उदास हो जाती हो। जानती हो क्यों, क्योंकि लालसायें कभी ख़त्म नहीं होतीं। जिस तरह मैं सोने के पिंजरे में क़ैद हूँ उसी तरह तुम अपने लालसा के पिंजरे में। इसलिये मुझमें और तुम में कोई अंतर नहीं है।' कहते हैं उसकी बात सुनते ही रानी को आत्मज्ञान हो गया। उसने पिंजरा खोल सोन चिरैया को आज़ाद कर दिया। वह फुर्र से उड़ी और मुँडेर पर बैठ गयी बोली – 'रानी आज से तुम भी आज़ाद हो गयी हो अपनी लालसा की दुनिया से!'

काहे को ब्याहे बिदेस

एक दो बार तो सुकेश ने कुछ नहीं कहा फिर एक दिन उन्होंने मान-मर्या दा और समाज की ऊँच-नीच उसे समझाई थी। शायद भाई ने ही उन्हें फोन किया होगा उसके पिताजी की देखभाल करने पर।

उसका मन कसैला हो गया वह उठ कर चल दी, इस मन से वह मेल नहीं पढ़ना चाहती थी। उसने कॉफ़ी बनाई और कम्प्यूटर में स्टोर ग़ज़ल के कलेक्शन से मन हल्का करने के लिए लाइट म्यूज़िक ऑन कर दिया। अनायास ही उसका माउस ट्रेडिशनल गाने पर क्लिक हो गया।

“काहे को ब्याहे बिदेस अरे लाखिया बाबुल मोहे,

हम तो बाबुल तोरे अंगना की बेलिया..... अरे लाखिया बाबुल मोहे.....”

ईंट-गारे का मकान अपने साथ कौन ले कर जाएगा भला! शाहजहाँ भी ताजमहल यहीं छोड़ कर गया था।

एक घर आँगन में कोमल भावनाओं, स्मृतियों व अपनत्व की अनुभूतियों के सिवाय होता ही क्या है? उसकी आँखें झर-झर कर बहने लगीं। समाज के नियम बहुत क्रूर और कठोर होते हैं; उसे

अचानक ही बाबूजी याद आने लगे। कैसे वह उसे गोद में ले कर खिलाते थे!

सचमुच बस कहने की बात है, उम्र भले ही पचास पार कर जाए आदमी का बचपन कभी नहीं मरता।